मीडिया समन्वयक कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

निमंत्रण 25 सितंबर 2017

कुरान विभिन्न आस्थाओं के सह अस्तित्व की बात करता है

जामिया मिल्लिया इस्लामिया :जेएमआईः में 'इस्लाम धर्म में शांति, मानवता और सहिष्णुता' विषय पर आज दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू हुई जिसमें यह विचार उभर कर सामने आया कि कुरान विभिन्न आस्थाओं के सह अस्तित्व की बात करता है और वह धर्म में ज़ोर ज़बर्दस्ती के पूरी तरह खिलाफ है।

जेएमआई के वाइस चांसलर प्रो तलत अहमद ने इसका उद्घाटन करते हुए अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि इस संगोष्ठी का मक़सद इस्लाम और मुसलमानों की '' घिसी–पिटी '' तस्वीर की जगह उसकी असली बात को रोशन करना है। उन्होंने कहा कि कुरान आक्रमकता और निर्दोष लोगों को मारने की अनुमति क़तई नहीं देता है। दुनिया के वर्तमान हालात में इस बात को स्पष्ट करने को उन्होंने ज़रूरी बताया।

उन्होंने कहा, हालांकि आज दुनिया में मुसलमानों के कुछ उग्र तत्व और संगठन उभरे हैं लेकिन यह हमारा सौभाग्य है कि भारत में ऐसे तत्व पांव जमाने में नाकाम रहे हैं। भारत में मुसलमानों की इतनी बड़ी आबादी होने के बावजूद दुनिया के उग्रवादी संगठनों के यहां हिमायती नहीं हैं। उन्होंने युवाओं से कहा कि वे हमेशा सही रास्ते पर चलें।

इस्लामी मामलों के विद्वान और मौलाना अबुल कलाम विश्वविद्यालय :जोधपुरः के वाइस चांसलर प्रो अख्तरूल वासे ने कहा कि पैग़म्बर मुहम्मद ने कम्यूनकेट करने :संबंध रखनेः की बात कही थी कन्वर्ट :धर्मांतरणः करने कि नहीं।

संगोष्ठी में सभी इंसानों पर रहम की हिदायत देने वाले इस्लाम के वास्तविक संदेश को विकृत करने वाले '' राजनीतिक इस्लाम '' के चिंताजनक आयामों पर भी चर्चा की गई।

प्रो वासे ने कहा कि इस्लाम सर्वधर्म सद्भाव की वकालत करता है। कुरान में साफ कहा गया है '' धर्म में ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं है।' पैग़म्बर मुहम्मद ने 'तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए, मेरा दीन मेरे लिए' कह कर इस बात को पूरी तरह साफ कर दिया है।

उन्होंने कहा कि इस्लाम दूसरे धर्मों को बर्दाश्त करने की ही नहीं बल्कि उनका सम्मान करने की बात करता है। उन्होंने कहा कि पैग़म्बर मुहम्मद की ओर से की गई मदीने की मशहूर संधि में कहा गया है कि समझौते में शामिल हम सब लोग अपने अपने धर्म, आस्था और विश्वास पर क़ायम रहेंगे लेकिन मदीने पर हमला होने की स्थिति में सब मिल कर उसका मुक़ाबला करेंगे। उन्होंने कहा, यही स्थिति भारत के संविधान में है कि सब अपनी अपनी आस्थाओं का पालन करेंगे और देश पर हमला होने पर सब मिल कर उसकी रक्षा करेंगे।

पश्चिमी देशों को आड़े हाथ लेते हुए उन्होंने कहा कि जिन्होंने 20वीं सदी को 'क़तल की सदी' में बदल दिया वो आज हमें सीख दे रहे हैं जबकि ओसामा बिन लादेन, मुल्ला उमर जैसे आतंकियों और तालिबान, आईएसआईएस और जैश ए मुहम्मद जैसे संगठनों को अमेरिका ने सउदी अरब से मिलकर खड़ा किया, ये बात अब किसी से किसी से छिपी नहीं है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो ए के रामाकृष्णन ने अपने मुख्य भाषण में कहा कि आज मानवतावाद को आधुनिक यूरोपीय विचार के रूप में पेश किया जाता है जबकि यह पैग़म्बर मुहम्मद के समय से है जब उन्होंने केवल मुसलमानों को ही नहीं बल्कि, विभिन्न आस्थाओं, क़बीलों और विचारों को भी सम्मान दिया।

उन्होंने कहा कि इस्लाम ने आस्था में जड़ें बनाए रखने के साथ इंसानों के रंग, क़बीलों और संस्कृतियों को सम्मान दिया। इस्लाम का यह सबसे महत्पूर्ण पहलू है।

प्रो रामाकृष्णन ने कहा कि यही नहीं, इस्लाम बदलते समय की ज़रूरतों के साथ खुद को बदलने पर भी पूरा ज़ोर देता है जिसके चलते एक समय इस्लाम ने विज्ञान के प्रचार प्रसार में बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

इस संगोष्ठी का आयोजन जेएमआई के ''इंडिया–अरब कल्चर सेंटर'' ने किया। इस विभाग के डा नासिर रज़ा खान संगोष्ठी के निदेशक हैं।

प्रो साइमा सईद

मीडिया कोऑर्डनैटर